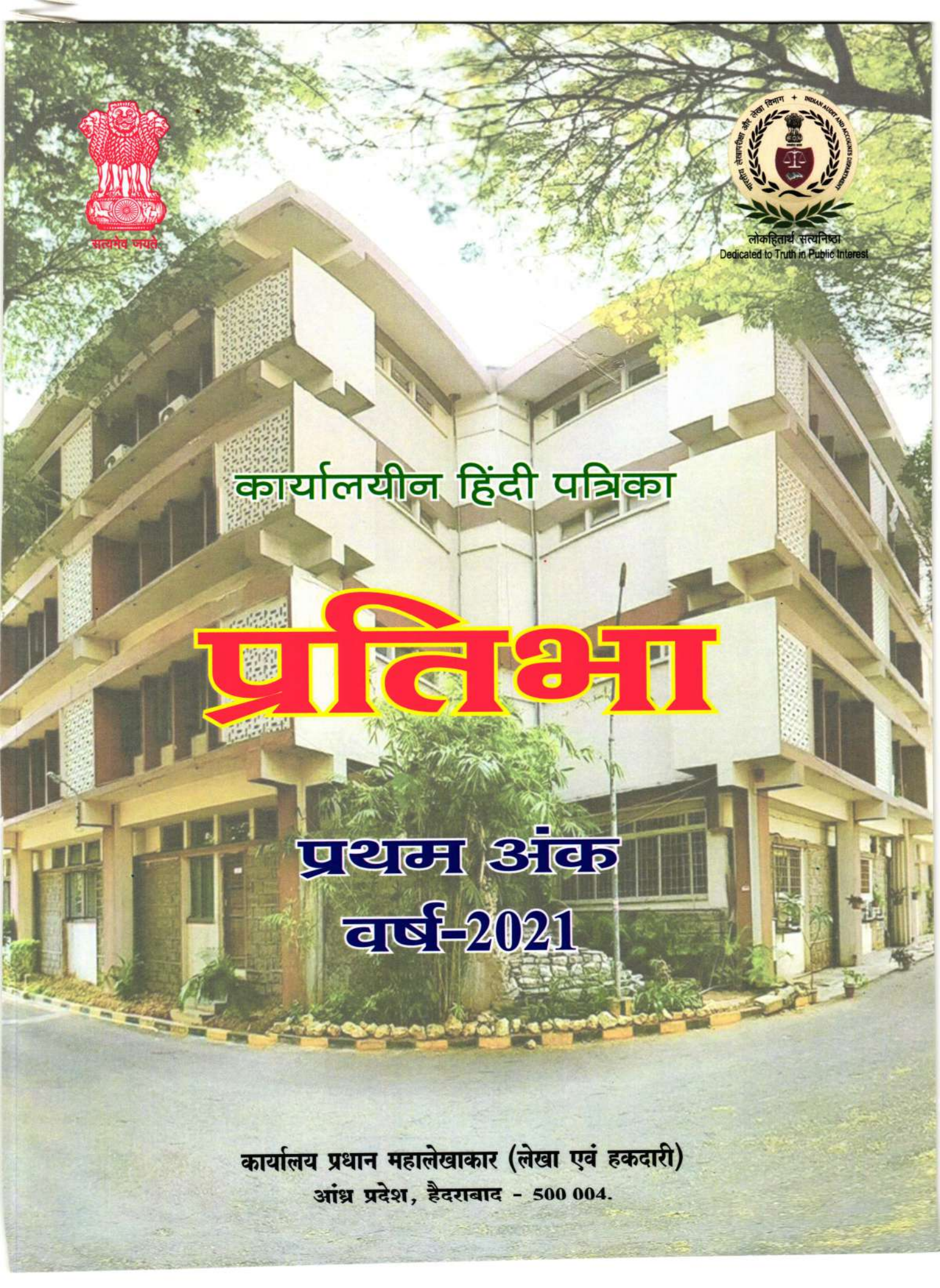

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका

प्रतिभा

प्रथम अंक

वर्ष-2021

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
आंध्र प्रदेश, हैदराबाद - 500 004.

प्रतिभा संपादक मंडल

बाएं से बैठे हुए :

श्री आर चंद्रशेखर-वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्रीमती लता मल्लिकार्जुना - प्रधान महालेखाकार, श्री जितेंद्र नाथ शर्मा - उपमहालेखाकार (प्रशासन),

बाएं से खड़े हुए :

कु. अपूर्वा सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्रीमती एम.आर. लक्ष्मी-वरिष्ठ लेखाकार, श्री फूल सिंह - वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, श्री एम. नागराजु, सहायक लेखा अधिकारी

सत्यमेव जयते

प्रतिभा
वार्षिक हिन्दी पत्रिका

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

आंध्र प्रदेश, सैफाबाद, हैदराबाद - 500 004.

संरक्षक : श्रीमती लता मल्लिकार्जुना - प्रधान महालेखाकार

प्रधान संपादक : श्री जितेंद्र नाथ शर्मा - उपमहालेखाकार (प्रशासन)

सलाहकार संपादक : श्री आर चंद्रशेखर-वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सहायक संपादक : श्री एम. नागराजु, सहायक लेखा अधिकारी

संपादक : श्री फूल सिंह - वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

टंकण सहयोग : श्रीमती एम.आर. लक्ष्मी-वरिष्ठ लेखाकार

संपादन सहयोग : कु. अपूर्वा सिंह, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

अनुक्रमणिका

प्रतिभा संपादक मंडल
परिचय
अनुक्रमणिका
गृह मंत्री का संदेश
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) आंध्र प्रदेश का संदेश
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) आंध्र प्रदेश का संदेश
प्रधान निदेशक (राजभाषा) मुख्यालय का संदेश
उपमहालेखाकार (प्रशासन) का संदेश
संपादकीय

क्र.सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ
1.	गलती किस की	श्री फूल सिंह - वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	10-12
2.	''माँ''	एम. आर. लक्ष्मी-वरिष्ठ लेखाकार	13-14
3.	मजदूर	शशांक सिंह - डी.ई.ओ.	15-16
4.	सच्चा ज्ञान	सुरेन्द्र कुमार - डी.ई.ओ.	17-18
5.	राजभाषा हिंदी की सार्थकता	फूल सिंह - वरि. हिंदी अनुवादक	19-20
6.	वो तकदीर अपनी थी	सुरेन्द्र कुमार - डी.ई.ओ.	25-26
7.	उड़ान की दास्तां	सुरेन्द्र कुमार - डी.ई.ओ	27
8.	जिद्द	अपूर्वा सिंह - कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	28-29
9.	औरत	शशांक सिंह - डी.ई.ओ.	30-31
10.	याद रखो	जितेन्द्र नाथ शर्मा - उप महालेखाकार (प्रशासन)	32
11.	जीवन-सत्व	दिवाकर दहिया - डी.ई.ओ.	34-35
12.	सकारात्मक विचार	एम.आर. लक्ष्मी - वरिष्ठ लेखाकार	36-37
13.	तेरी याद में	जितेन्द्र नाथ शर्मा - उपमहालेखाकार (प्रशासन)	38
14.	परिवर्तन की आस में दम तोडती अंतिम साँसें	चंद्रपाल वर्मा - डी.ई.ओ	39-40
15.	शहीद हुए सैनिक की डायरी के अंतिम पन्ने पर लिखे खत को पढती उसकी माँ	चंद्रपाल वर्मा - डी.ई.ओ	41-42
16.	प्रदूषण एक समस्या	वाई. डी. तेलंग - वरि. लेखाकार	43

(रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।)

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत

AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है । कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है । हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं । अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है । हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी,बल देने का प्रयास किया है । हर राज्य की भाषा को,हिंदी ताकत देती है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है । 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए । भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुज़र रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए संबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूं। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूं कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूं कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूं,- अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुन: मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

भारत माता की जय!

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

(अमित शाह)

सत्यमेव जयते

संदेश

कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''प्रतिभा'' का प्रथम अंक प्रकाशित करने पर सर्वप्रथम इसके प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ। अहिंदी भाषी क्षेत्र में पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक कदम है जो कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रयासों के कारण संभव हो पाया है। कार्यालय में राजाभाषा हिंदी के प्रति जागरुकता लाने में पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। हिंदी हमारे देश की राजभाषा है जिसका प्रचार-प्रसार करना हम सभी का कर्तव्य है। पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को मैं ह्रदय से बधाई देती हूँ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(रजनी संकरन)
प्रधान महालेखाकार
(लेखा परीक्षा) आंध्र प्रदेश।

सत्यमेव जयते

संरक्षक की कलम से....

कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''प्रतिभा'' का प्रथम अंक सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम, हिंदी पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाई देती हूँ जिनके अनवरत प्रयासों के कारण यह कार्य संभव हो पाया है। यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रति निष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो समस्त देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास कर रही है। मैं आशा करती हूँ कि सरकारी कामकाज में इससे हिंदी को प्रोत्साहन मिलेगा और कार्यालय के सभी अधिकारी/कर्मचारी दैनिक कार्यो में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग कर इसके गौरव को बढाएंगे।

कार्यालय की यह पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, यही मेरी शुभकामना है।

(लता मल्लिकार्जुना)
प्रधान महालेखाकार

सत्यमेव जयते

संदेश

मुझे हर्ष हो रहा है कि आपका कार्यालय हिन्दी पत्रिका ''प्रतिभा'' के प्रथम अंक का प्रकाशन कर रहा है। हिन्दी हमारे राष्ट्र की राजभाषा है एवं कार्यालयीन कार्य में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। हिन्दी के प्रचार - प्रसार के लिए यह पत्रिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होगी तथा इससे कार्यालय में हिन्दी भाषा के प्रगामी प्रयोग में और गति आएगी, साथ ही कार्यालय में अधिकारियों/कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी।

मुझे आशा है कि आपका कार्यालय भविष्य में भी इस पत्रिका का प्रकाशन करता रहेगा। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए मैं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

(राज कुमार)
प्रधान निदेशक (राजभाषा)

सत्यमेव जयते

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि इस कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका ''प्रतिभा'' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। सर्वप्रथम, पत्रिका परिवार के समस्त सदस्यों और रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में अपना सहयोग दिया है।

पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढावा देना है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का अपना स्थान है। केंद्र सरकार के कर्मचारी होने के नाते हमारा यह दायित्व बनता है कि हम अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करें। विचारों की अभिव्यक्ति के लिए यह पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। मैं आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग इसी प्रकार मिलता रहेगा।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(जितेन्द्र नाथ शर्मा)
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

संपादकीय

कार्यालय की हिंदी पत्रिका ''प्रतिभा'' का प्रथम अंक सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। सर्वप्रथम मैं पत्रिका के प्रकाशन को सफल बनाने एवं मार्गदर्शन करने में कार्यालय के उच्च अधिकारियों का धन्यवाद करता हूँ जिनकी प्रेरणा से यह कार्य संपन्न हो पाया है। श्रीमती रजनी संकरन, प्रधान महालेखाकार की प्रेरणा से ही इस पुनीत कार्य का शुभारंभ हुआ। पत्रिका में प्रकाशन हेतु रचनाएं उपलब्ध करवाने वाले सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को भी मैं हार्दिक बधाई देता हूँ जिनके प्रयासों के कारण यह कार्य संभव हो पाया है।

राजभाषा के उत्थान में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत महत्वपूर्ण है। किसी भी देश की उन्नति के लिए अपनी भाषा का होना अति महत्वपूर्ण है जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है। हिंदी हमारे देश की अधिकारिक भाषा है एवं इसका प्रयोग राजाभाषा और संपर्क भाषा के रुप में निर्बाध रुप से बढ रहा है। केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है ।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लेखकों को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ। कार्यालय के जो अधिकारी/कर्मचारी इस बार अपनी रचनाएं शामिल नहीं करवा सके उनसे आने वाले समय में सहयोग की अपेक्षा करता हूँ।

पत्रिका का प्रकाशन अविरल रुप से चलता रहे यह मेरी शुभ कामना है।

आपका शुभाकांक्षी,

(फूल सिंह)
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री फूल सिंह
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

गलती किस की

मनीष शुरु से ही पढाई-लिखाई में होशियार था। वह हर वर्ष परीक्षा में अपने विद्यालय में टॉप करता था। यह उसका पढाई का अंतिम वर्ष था। उसने कॉलेज की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। उसके सभी दोस्तों ने इस सफलता पर बधाईयाँ दी। उसका परिवार भी खुशी से फूला न समा रहा था। अब मनीष ने सोचा कि पढाई तो पूरी हो चुकी है क्यों न इसके साथ-२ रोजगार भी प्राप्त कर लिया जाए। उसने यहाँ-वहाँ नौकरी की तलाश शुरु कर दी । वह दिन भी आया जिसका उसे इंतजार था। एक अच्छी फर्म में उसे मैनेजर की नौकरी मिल गई । किसी तरह की कोई कमी नहीं थी। माता-पिता की खुशी का भी कोई ठिकाना नही था।

समय गुजरता गया। एक दिन माता-पिता ने खाना खाते समय मनीष से शादी के बारे प्रश्न कर लिया। उसने कहा कि वह शादी के लिए तैयार है लेकिन शादी वह अपनी पसंद की लड़की से ही करेगा।

माता-पिता ने सोचा कि हमारा बेटा खुश रहना चाहिए। अगर तुम अपनी पसंद की लड़की से शादी करो तो भी हमें कोई परेशानी नहीं है। मनीष ने अपने मन की बात माता-पिता के सामने रख दी और उनकी सहमति मिलते ही उसकी बाँछे खिल गई।

प्रियंका, जो पास की ही एक कंपनी में मैनेजर की नौकरी करती थी, उसका मनीष के साथ गहरा प्यार था। दोनों कॉलेज की पढ़ाई के समय एक ही कक्षा में पढ़ते थे। दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते थे। कई बार तो कंपनी में ड्यूटी पर आते हुए एक ही गाड़ी से सफर करते थे। जान-पहचान तो पहले से ही थी।

एक दिन मनीष ने सोचा कि प्रियंका से बढकर कोई सुंदर और प्यार करने वाली लड़की उसे नहीं मिल सकती। क्यों न आज ही उसे अपने मन की बात कह दूँ और शादी की बात कर लूँ। घर पर माता-पिता भी यही चाहते हैं कि उनके बेटे की शादी धूम-धाम से हो और वे अपनी जिम्मेदारी से मुक्त हों।

एक दिन जब मनीष और प्रियंका अपनी गाड़ी से कंपनी जा रहे थे तो मनीष ने प्रियंका से पूछ ही लिया, प्रियंका, मम्मी-पापा शादी करवाने के लिए दबाव बना रहे हैं, मैं क्या करुँ? इस पर प्रियंका ने कहा, बहुत अच्छा। जल्दी से शादी कर लो और अब समय भी आ ही गया है। मनीष इससे आगे कुछ और कह पाता तभी उनकी गाड़ी कंपनी के गेट पर पहुँची। दोनो अपनी-अपनी कंपनी में प्रवेश करने लगे।

मनीष के मन को आज शांति नहीं मिल रही थी। उसने जैसे-तैसे दोपहर तक कार्य किया खाना खाने के पश्चात उसने प्रियंका को फोन लगाया और बोला कि आपसे कोई आवश्यक बात करनी है। यदि संभव हो तो शाम को सामने वाले पार्क मे मिलते हैं। प्रियंका ने बिना कुछ पूछे हाँ कर दी और शाम को पार्क मे मिलने का समय तय कर लिया। मनीष और प्रियंका अपनी ड्यूटी पूरी करने पश्चात पार्क में चले गए।

एक उचित सा स्थान देखकर दोनों बैठ गए। यहाँ-वहाँ की चर्चा करने के बाद मनीष ने प्रियंका से कहा, ''सुबह आते हुए हम एक विषय पर चर्चा कर रहे थे।'' प्रियंका बोली हाँ। कहो, क्या कहना चाहते हो?

मनीष बोला, हम कितने वर्षों से एक दूसरे को जानते है, पहचानते है। मै आपसे शादी करना चाहता हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करने के लिए तैयार हो?

मनीष की बात सुनकर प्रियंका एक पल के लिए तो सहम गई। वह आँखे उठाकर मनीष को देख भी नहीं पा रही थी। उसकी आँखो में एक अजीब सी रोशनी और चेहरा लाल हो गया। मनीष ने फिर प्रश्न किया। प्रियंका ने मुस्कुरा कर कहा, जैसी आपकी इच्छा। मुझे आपका प्रस्ताव स्वीकार है। लेकिन! लेकिन क्या। मनीष बोला, मैं अपने मम्मी-पापा से बात कर लूँ, तभी फाईनल समझना। ऐसे ही बातें करते-करते समय बीत गया। सूरज ढलने लगा था। दोनों गाड़ी में बैठे और अपने घरों की ओर चल दिए।

घर पहुँच कर रात का खाना खाने के बाद प्रियंका ने अपनी मम्मी को मनीष के साथ हुई सारी बात सुना दी। प्रियंका की मम्मी की खुशी का ठिकाना नहीं था। उसने प्रियंका के पापा से इस बारे में चर्चा की तो उन्होंने भी एकदम से हाँ कर दी और पूछा कि क्या प्रियंका इस शादी के लिए तैयार है।

मनीष और प्रियंका के पापा की आपस मे गहरी दोस्ती थी। जब इस विषय में चर्चा हुई तो दोनों परिवारों ने मिलकर सगाई का मुहुर्त निकलवाकर मिलने का समय तय कर लिया। दोनों की सगाई हो गई थी।

वह समय भी आया जब मनीष और प्रियंका की शादी हो गई। दोनों को अपनी-२ कंपनी में उच्च पद पर पदोन्नति भी मिल गई थी। कुछ ही समय में दोनों ने शहर में अपना आलीशान मकान भी बना लिया और खुशी-खुशी जीवन व्यतीत करने लगे। ऐशो-आराम की हर सुविधा उनके पास थी।

समय बीतता गया। एक ऐसा समय भी आया जिसके बारे में न किसी ने सोचा था और न ही किसी ने अनुमान लगाया था। अर्थव्यवस्था मे मंदी के कारण बड़ी-बड़ी कंपनियाँ और कारखाने बंद होने के कगार पर आ गए । मनीष और प्रियंका जिस कंपनी में काम करते थे, कर्ज में डूबती चली गई। उन दोनों की नौकरी भी चली गई। अनिश्चितता के इस दौर में मनीष की मानसिक स्थिति बिगड़ती चली गई। वह अपने आप पर नियंत्रण नही रख पा रहा था। प्रियंका उसे समझाने का प्रयास करती, लेकिन सब व्यर्थ था।

परिस्थितियों के वशीभूत होकर मनीष ने एक दिन आत्महत्या कर ली। उसने यह भी नहीं सोचा कि उसकी पत्नी प्रियंका और उसके माता-पिता का क्या होगा। उन पर क्या बीतेगी। एक हँसता खेलता परिवार यूँ एक पल में बिखर जाएगा, इसके बारे में किसी को तनिक भी खबर न थी। यह गलती किस की है, इसके लिये किसको दोष दें।

अब प्रश्न यह उठता है कि सभी सुख-सुविधाओं के होते हुए भी व्यक्ति इस तरह के कदम उठाने को क्यों मजबूर होता है। हमारा समाज अपने बच्चों की सफलता पर तो खुशियाँ मनाता है, उन्हे जीवन में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करता है।

लेकिन अगर हमारे बच्चे जीवन के किसी मोड़ पर असफल हो जाते हैं तो आत्महत्या जैसा जघन्य अपराध कर लेते हैं। इन सभी परिस्थितियों को देखकर हम यह सोचने के लिए विवश हो जाते हैं कि हमारे पालन -पोषण में कहीं न कहीं कमी रह गई है। सफलता जहाँ व्यक्ति की उन्नति का मार्ग प्रश्स्त करती है वहीं असफलता व्यक्ति को संभलने और अधिक परिश्रम करने के लिए प्रेरित करती है। जीवन में उतार-चढ़ाव तो आते रहते हैं। विषम परिस्थितियों में भी व्यक्ति को समभाव से जीना चाहिए और परिश्रम करते हुए अपनी मंजिल की ओर अग्रसर रहना चाहिए।

एम. आर. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखाकार

"माँ"

माँ एक जीवन की परिभाषा है,
माँ के आँचल में जन्नत की छाँव है,
माँ के हर रुप में जीवन की परिभाषा है।

माँ का रिश्ता अंबर की गहराई से ऊंचा है,
माँ तुम स्नेह, साहस, समर्पण और त्याग की मूर्ति हो,
माँ आप मेरे लिए एक ढाल हो।

जीवन के हर मोड़ पर जब मैं निराश
होती हूँ माँ आप मेरे पास आशा
की किरण के रूप में होती हो अगर
मैं आप से कुछ न कह कर बेचैन
होती हूँ तो मेरे दर्द को आप हर पल
महसूस कर मुझे हौंसला देती हो, मेरे हर दर्द
को आप महसूस करती हो, मुझ तक कोई परेशानी
आने न देती हो मेरी बेचैनियों में राहत हो

माँ आप हर पल मेरे साथ रहती हो
मेरा हौंसला बढाती हो, आज मैं तुम से
ही हौंसला पाकर जी रही हूँ।
इस जीवन का आधार भी माँ आप हो

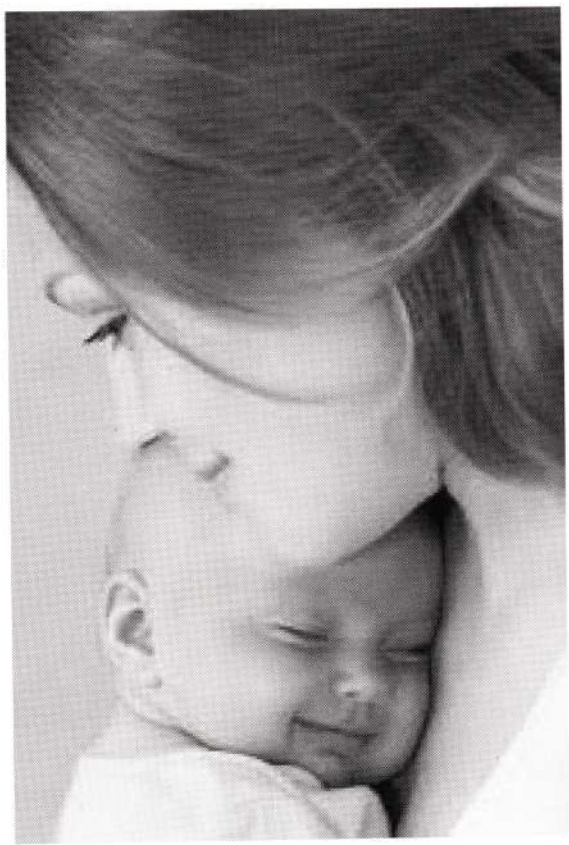

इस भ्रममयी दुनिया में माँ,
बस आप ही एक सच्चाई हो
माँ आप के हर किरदार में एक सच्चाई है

माँ आप मेरी पहली चाहत हो
मेरी बेचैनियों में राहत हो
बेटी और माँ के इस रिश्ते की गहराई ऐसी और नहीं,
ऐसा कोई मोड़ नहीं जहाँ आप मेरे साथ नहीं,
आज मैं आप से प्रेरणा लेकर जी रही हूँ।

इस जीवन का आधार आप हो माँ
आप के बिना मेरा जीवन वीरान है माँ
मैं चाहूँगी हर पल आप मेरे साथ रहे
मेरे जीवन का आधार आप ही हो माँ
माँ आपके आँचल की छाँव में मैं हर पल
रहूँ, यही मेरी आशा है।

शशांक सिंह
डी.ई.ओ.

मजदूर

वो जो उसके काँधे पे, जिम्मेदारी का बोझ है,
हाथों में रगड़ के खरोटे हैं।
वो जो उसकी आँखे, थोडी-सी अलसाई हैं,
साँसों में फिर भी गजब के झोखे हैं।
वो जो उसके माथे पे, शिकन की लकीर हैं।
उसमें तैरती कुछ पसीने की बूँदें है।
वो जो नसें, जिसमें लहू का उफान है
थक के हारा है, शरीर बेजान है।
वो जो रुकता नहीं, कहीं ठहरता नहीं
उसकी मेहनत ही, पाँचो वक्त की नमाज है।
वो जो दुहराता है..... हर रात सोने से पहले
अपनी नन्ही-सी बच्ची की कुम्हलाई आँखे,
अपनी पत्नी की भीगी पलकों से झरते,
टूटी-सी, जुड़ती मुरझाई सी बातें।
वो दुहराता है..... हर रात सोने से पहले
अपनी टूटी झोंपडी के टपकते छत को
जिल्लतों में कटे हर इक दिन को,
वो दुहराता है..... हर रात सोने से पहले
अपनी बूढी माँ के आँखों के कोने,

गाँव को छोड़ते उस रास्ते को।
वो जिसकी आँखों में चमक, पैरों पे छाले हैं,
इस बड़ी-सी दुनियाँ में, बहुत थोड़े से हमारे है।
वो जिसकी नींद भी थक कर सो गयी है,
जिंदगी हर दरवाजे पे पड़ी, पायदाने है।
वो जो हमें जरा-सा भी नहीं दिखता
वो जिसे हम हर रोज देखते हैं।
वो जो इस सतरंगी दुनिया का, इक स्याह-सा अक्स है,
वो जिसे हम हर इक रंग में ढूँढते हैं।
वो जो धूप में जरा और चमकता है
पसीनों से नहाया, हर रोज जो जलता है।
ये उसकी कहानी, जरा सब सुन लो,
नहीं उसकी जुबानी, जरा सब सुन लो,
वो नहीं कहेगा, नहीं सुनेगा
है जज्बे की कहानी, जरा सब सुन लो,
जब कहीं भी मिले, तुम्हे वो आदमी
जरा गौर देना, रुक के देखना।
जब कहीं भी मिले, तुम्हे वो आदमी
थोड़ा ठहर के, मुस्कुरा तुम देना।
जब आँखों ही आँखों से नजरें मिलना
उसका दर्द कुछ, तुम भी बाँट लेना।
जब उठाता वो पत्थर, कुछ सहारा दे देना,
उसकी टपकती झोंपडी पे मलहम लगाने,
अपने आशियाने की छत तक, तुम साथ-साथ जाना।
कुछ ईंट छत पे, तुम भी लगाना।
कुछ ईंट छत पे, तुम भी लगाना।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

सुरेन्द्र कुमार
डी.ई.ओ.

सच्चा ज्ञान

टूट गई रस्सी खिंचाव कैसा
मिट गई लकीर फिर निशान कैसा।
जला ज्योति जग में, उजाले की
नहीं तो ज्ञान का मशाल कैसा

टूट गए रिश्ते, फिर लगाव कैसा
मसल दी गई राहें, फिर पड़ाव कैसा।
जो अत्याचार का अंत कर न सका,
वो मानव अवतार कैसा।

बिखर गई जिंदगी फिर स्वाभिमान कैसा,
मन से माया मिटी नहीं, फिर वैराग्य कैसा,
जो लोगों को आपस में वैर करा दे
उस धर्म के लिए ईमान कैसा।

टूट गए सब, फिर इंतजार कैसा,
अपनी गलती दिखी नहीं, फिर गैरों पर इल्जाम कैसा।
जो रुढ़िवादी सोच मिटा न सका,
वैसी नई सोच का आगाज कैसा।

मुक्कमल हुई ईबादत फिर ख्वाब कैसा
हसरतें हुई हासिल, फिर खोकर पाने का एहसास कैसा।
जन्नत ला न सका सदन में
फिर बसे ईश्वर का सम्मान कैसा।

माता-पिता का आदर किया नहीं फिर संस्कार कैसा
जो अंदर से झकझोरा नहीं, वो सच्चा ज्ञान कैसा
जो अपने दम पर दुनिया बदल न सके
वो दमदार कैसा

जला ज्योति जग में, उजाले की
नहीं तो ज्ञान का मशाल कैसा।

फूल सिंह
वरि. हिंदी अनुवादक

राजभाषा हिंदी की सार्थकता

हिंदी हमारे देश की राजभाषा है जिसका अर्थ है सरकार के कामकाज की भाषा, हिंदी का महत्व भारतेन्दु हरिशचन्द्र के इस कथन से लगाया जा सकता है।

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल।

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है। केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर नियम बनाए गए हैं और इन नियमों का अनुपालन करने का उत्तरदायित्व विभागाध्यक्षों/कार्यालयाध्यक्षों को दिया गया है। जहाँ तक हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने का प्रश्न है तो इसकी प्रगति एक कदम आगे दो कदम पीछे रही है। संविधान के अनुच्छेद 343 के खंड-1 में यह प्रावधान किया गया है कि भारत संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी। संविधान में स्पष्ट व्यवस्था होने के बावजूद आज भी हिंदी अंग्रेजी की सौतेली बहन बनी हुई है।

हिंदी हमारी राजभाषा होने के बावजूद आज भी हमारा चिंतन अंग्रेजी में है। हम बातचीत मे अंग्रेजी का प्रयोग करने में अपना गौरव समझते हैं। हमें ऐसी मानसिकता का परित्याग कर देना चाहिए। जब विश्व के देश अपनी भाषा में पढ़कर उन्नति कर सकते हैं तो हमें अपनी राजभाषा को अपनाने में जरा भी झिझक नहीं होनी चाहिए। किसी भी स्वतंत्र राष्ट्र के लिए जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का भी है। शासन और आम जनता के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए। सभी शासकीय कार्य जनता की भाषा में ही होने चाहिए ताकि आम जनता उसे सुगमता से समझ सके। राजभाषा देश के विभिन्न भागों को एकसूत्र में पिरोने का कार्य करती है जिसे हिंदी बखूबी निभा रही है।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु केंद्र सरकार के राजभाषा विभाग की और से नियम/अधिनियम बनाए गए हैं। प्रत्येक क्षेत्र के लिए लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। राजभाषा के प्रयोग में उत्साहवर्धक वृद्धि हुई है, फिर भी हम अपेक्षित लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल हो रहे हैं। इसका एक मुख्य कारण है कि जो सरकारी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी जानते हैं वे भी अपना कार्यालयीन कार्य अंग्रेजी में ही करना पसंद करते हैं। वे हिंदी में कार्य करने में हीन भावना और संकोच का अनुभव करते हैं। यही हीनता और संकोच की भावना राजभाषा के प्रचार-प्रसार में बहुत बडी बाधा है। अगर हम सब यह प्रण कर लें कि हम अपना अधिकतर कार्य हिंदी में ही करेंगे तो वह दिन दूर नहीं जब हिंदी वास्तव में भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा के रुप में प्रतिष्ठित होगी।

भारत सरकार का राजभाषा विभाग भी हिंदी के प्रचार प्रसार में अहम भूमिका निभा रहा है। हिंदी प्रशिक्षण की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा केंद्र सरकार के कार्यालयों में कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करने के लिए प्रबोध, प्रवीण एवं प्राज्ञ कक्षाएं नियमित रुप से चलाई जा रही हैं। केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2015-16 से पारंगत नामक प्रशिक्षण आरंभ किया गया है। इसके अलावा हिंदी टंकण/हिंदी आशुलिपि के कोर्स भी करवाए जा रहे हैं। इन परीक्षाओं को पास करने पर कर्मचारियों को वैयक्तिक वेतन वृद्धि के अलावा प्रोत्साहन के रुप में मानदेय भी प्रदान किया जाता है। राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से कंपयूटर पर हिंदी में कार्य करने के लिए हर वर्ष पाँच दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मौलिक रुप से राजभाषा हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए राजभाषा गौरव पुरस्कार भी प्रदान किए जाते हैं।

संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा और प्रोत्साहन है। हम सब का यह कर्तव्य बनता है कि हम राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में सार्थक प्रयास करें एवं दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें।

हिंदी कार्यशाला में विभागीय प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए उपस्थित अधिकारी/कर्मचारी।

श्रीमती लता मल्लिकार्जुना, प्रधान महालेखाकार महोदया सितंबर 2020 को समाप्त तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए ।

श्रीमती लता मल्लिकार्जुना, प्रधान महालेखाकार महोदया संयुक्त हिंदी पखवाड़ा - 2020 के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए ।

श्री जितेंद्र नाथ शर्मा, उपमहालेखाकार (प्रशासन) संयुक्त हिंदी पखवाड़ा - 2020 के विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए ।

सुरेन्द्र कुमार
डी.ई.ओ.

वो तकदीर अपनी थी

तुमने चाहा तुमने छोड़ा
वो तक्दीर भी अपनी थी।
तुमने सजायी, तुमने तोड़ी
वो तस्वीर भी अपनी थी।
जो मिटी नहीं किस्मत से मेरे
वो लकीर भी अपनी थी।
लिख कर गा देता हूँ जो मैं
वो पीर भी अपनी थी।

लो भुला दी हमने हर हसरत
लो मिटा दी यादें सब हद तक
जिसमें बँधा हूँ मैं कसमों से
वो जंजीर भी अपनी थी।
जो मिटी नहीं किस्मत से मेरे
वो लकीर भी अपनी थी।
लिख कर गा देता हूँ जो मैं
वो पीर भी अपनी थी।

मत पूछो अब कैसे जीते देखो आकर रोज मैं मरते
कैसे तुझको मैं दोषी कह दूँ
तुमसे प्रीत भी अपनी थी।
जो मिटी नहीं किस्मत से मेरे
वो लकीर भी अपनी थी।
लिख कर गा देता हूँ जो मैं
वो पीर भी अपनी थी।

आ जाओ हम फिर मिलते हैं
उन राहों पर फिर चलते हैं
जिन सपनों को हमने छोड़ा
वो मंजिल भी अपनी थी।
जो मिटी नहीं किस्मत से मेरे
वो लकीर भी अपनी थी।
लिख कर गा देता हूँ जो मैं
वो पीर भी अपनी थी।

उड़ान की दास्तां

सुरेन्द्र कुमार
डी.ई.ओ

ख्वाहिश मेरी, सपना मेरा,
इच्छा मेरी रातों का मेहनताना मेरा,
ना कोई विश्वास करे, ना कोई दे ढाढस,
हर कोई उपहास करे बता कर सपनों का बंदस,

मन मेरा शोर करे, हर खून का कतरा-कतरा अब
जो करे, सपना करो साकार अब, मत सह
तू ललकार अब, जब तक ना होंगे पूरे सपने
ना होंगे कोई तेरे अपने,
चुप सा तू क्यों बैठा है मरियल सा क्यों ऐंठा है।

अपनी यौवन को तुम तलवार बना,
बुद्धि का तू हथियार बना,
सबको तू अपनी औकात दिखा दे
सच को तू सौगात बना दे।

मेहनत का तू पैगाम बना दे
ना हटना ना डिगना ना टस से मस करना,
इस बात को तू मन के अंदर बैठा ले,
हर कड़वी यादों को तू सजा ले,

एक दिन ऐसा आएगा,
तेरा सपना हो जाएगा अपना।
चारों ओर जयकार होगी खुशियों की सौगात होगी,
ख्वाहिश मेरी, सपना मेरा।

अपूर्वा सिंह
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

जिद्द

पार्था नाम एक चार साल के बच्चे का था। वह एक गाँव में अपनी दादी के साथ रहता था। उस गाँव में लोग बच्चों को शारीरिक रुप से मजबूत बनाने के लिए तरह तरह के खेलों का आयोजन करते थे। कसरत, दौड़-भाग, मार्शल आर्ट, कुशती, कबड्डी ये सब उन लोगों के मनोरंजन का साधन थे। इसलिए वहां पर हर एक बच्चा किसी न किसी खेल में दिलचस्पी लेकर उसका अभ्यास करता था। ये सब देखकर कभी-कभी पार्था बहुत उदास हो जाता था। वो किसी खेल में हिस्सा नहीं ले सकता क्योंकि उसकी बायीं बाजू नहीं थी। पार्था जब कभी बच्चों को जीतकर वापिस लौटते हुए देखता तो दादी से पूछता, क्या मैं आपके लिए कभी ट्रोफी नहीं ला पाउंगा। दादी ने जवाब दिया जरुर मेरे बेटे, एक दिन तुम जरुर ट्रोफी जीत कर लाओगे, सही वक्त आने दो। दादी बहुत सकारात्मक थी। बच्चे को हमेशा प्रेरित करती रहती थी।

उस गाँव में मार्शल आर्ट का एक स्कूल था। उस स्कूल का मास्टर अपने जमाने का कामयाब व मशहूर खिलाड़ी था। दूर-दूर तक उसकी कला का लोहा माना जाता था। पार्था रोज उस स्कूल के बाहर जाकर बैठता था। एक दिन उसने अपनी दादी से कहा, ''आप मेरा दाखिला इस स्कूल में करा दें, दादी। ''दादी ने कहा,''नहीं, बेटे ये कैसे हो सकता है? फिर भी पार्था ने जिद पकड़ ली और कुछ नहीं सुना। अंत मे थक कर दादी उसे लेकर स्कूल चली गई। मास्टर ने जब पार्था को देखा तो हैरान हुआ। दादी बोली, ''आप मेरे बच्चे को अपने स्कूल में दाखिल कर लें, मैं जानती हूँ कि ये बात अजीब है। मैंने इसे बहुत समझाया पर ये मानता नहीं शायद यहां का माहौल देखकर ही इसे समझ आ जाए कि मार्शल आर्ट इसके लिए नहीं है।'' मास्टर कुछ समझ नहीं रहा था कि क्या करे। मासूम बच्चे का दिल नहीं दुखाना चाहता था, इसलिए आखिर उसने बच्चे को स्कूल में रख लिया।

अब सवाल ये था कि पार्था को सिखाया क्या जाए। मास्टर ने अपने तीस साल के अभ्यास को शुरु से अंत तक ध्यान से सोचा, फिर उसने पार्था को बुलाकर एक किक का अभ्यास कराया और कहा, ''तुम मार्शल आर्ट की इसी ट्रिक का अभ्यास करो?'' पार्था ने उसी एक किक का अभ्यास करना शुरु कर दिया, बड़ी लग्न व गंभीरता के साथ। बाकि बच्चे हँसते कि मास्टर ने दिल बहलाने के लिए इसे फिजूल सी बात में उलझा दिया। पार्था ने उन की बातों पर कोई ध्यान नहीं दिया। इस तरह वक्त गुजरता गया लेकिन पार्था की दिलचस्पी में कोई कमी नहीं आई। पार्था पढ़ाई-लिखाई करने लगा और काम सीखने लगा। पर अभ्यास नहीं छोडा।

फिर बहुत सालों बाद गाँव में खेल प्रतिस्पर्धा का आयोजन हुआ। दूर-दूर से प्रतिभागी आए, सबने उम्दा प्रदर्शन किया। लेकिन उनमें एक खिलाडी विलक्षण प्रतिभा वाला था बेहतरीन से बेहतरीन खिलाडी भी उसके सामने टिक नहीं पाए क्योंकि उसे मार्शल आर्ट की हर एक ट्रिक की काउंटर ट्रिक मालूम थी। इसलिए कोई भी उसको हरा नहीं पाया। पार्था ने उसके हर दाव-पेंच को ध्यान से देखा और फिर मास्टर से जाकर कहा।'' मैं इसके साथ मुकाबला लड़ना चाहता हूँ'' मास्टर ने हैरानी से पार्था को देखा, क्योंकि पार्था कोई ऐसी बात नही बोलता था, जो बेमानी हो, फिजूल हो। मास्टर ने कहा, ''पार्था सोच लो।''

लेकिन पार्था फैसला कर चुका था। इसलिए रिंग में उतर गया। और जब लोगो ने यह देखा तो आश्चर्य करने लगे। दूसरा खिलाड़ी बड़े आत्मविश्वास से पार्था को देखकर मुस्कुराने लगा और सोचने लगा कि बस पाँच मिनट और जीत मेरी। दोनों लोगों में मुकाबला शुरु हो गया। लोग साँस रोक कर मुकाबला देख रहे थे। पार्था के शरीर व मस्तिष्क का तालमेल बहुत अच्छा था, इसलिए उसका डिफेंस (प्रतिरक्षा) अच्छा था। यही वजह थी कि वो उस माहिर खिलाडी के वार से बचता रहा। लेकिन फिर पार्था की ताकत कम पड़ने लगी। और भीड़ में बैठी दादी को लगा कि बस अब पार्था गिरने ही वाला है सभी यही सोच रहे थे कि अचानक पार्था ने अपनी उसी किक से वार किया और दूसरा खिलाड़ी जोर से गिरा फिर उठा, पार्था ने फिर वही वार दुगनी तेजी से किया और वो खिलाड़ी फिर से जमीन पर गिरा, वो खिलाड़ी बार-बार गिर रहा था, पार्था की ट्रिक पर कोई काउंटर ट्रिक नहीं लगा रहा था। दस साल का अभ्यास पार्था के बखूबी काम आ रहा था। दूसरा खिलाडी इस पर कोई काउंटर ट्रिक नहीं आजमा पाया और हार गया। क्योंकि इस किक का तोड़ यह था कि वो पार्था की बायीं बाजू से उसे पकड़ कर उसे पटक दे, लेकिन बायीं बाजू तो थी ही नहीं।

इस तरह पार्था ने अपनी पूरी ताकत लगाकर जीत हासिल की। कहानी पुरानी है लेकिन सिर्फ पार्था ही नहीं, ऐसे बहुत से लोगों की इस तरह की मिसालों से दुनिया भरी पड़ी है। चयन हमें करना होता है। कमी को लेकर अफसोस करना है या उसे खूबी बनाकर पार्था की तरह कहानी-किस्सों में नाम दर्ज करना है।

शशांक सिंह
डी.ई.ओ.

औरत

यूँ तो, आदम की आदमी हूँ मैं,
औरत के रूप में सादगी हूँ मैं।
कभी दरिया, कभी समंदर हूँ,
कभी इक तिनका, कभी बानगी हूँ मैं।
कभी पर्वतों-सी ऊंचाई
कभी समतल अंगडाई,
कभी शुष्क-ए-चमन में,
मुरझाई हूँ मैं।1।

यूँ तो पीर हूँ, हर दर्द की दवा हूँ मैं,
जननी हूँ, फिर भी कितनी बेबस हूँ मैं।
गुल-ए-गुलिस्ता हूँ
फूल हूँ, खुशबू हूँ मैं,
कांटों से फिर भी, खुद को बचाई हूँ मैं।
आँख हूँ, काजल हूँ
अश्क-ए-नूर हूँ मैं,
रात भर रोकर खुद को जगाई हूँ मैं ।2।
रोशन हूँ, उजाला हूँ।
चाँद की चाँदनी हूँ मैं

लोग कहते हैं, आदमी की परछाई हूँ मैं।
टूटी हूँ, बिखरी हूँ,
फिर भी खुद को संजोई हूँ मैं।
दबी हूँ, फिर भी सब को उठाई हूँ मैं। ।3।

यूँ तो आग हूँ, आग की लपट हूँ मैं,
ठण्डी हूँ, हर रोज जली हूँ मैं।
सृष्टि हूँ, सृजन हूँ
प्रकृति का नियम हूँ मैं,
खुद ही जन्मी, खुद ही पली हूँ मैं, ।4।

इक नाम हूँ, बेनाम भी हूँ
आवारा की आवारगी हूँ मैं
सहमी हुई हिम्मत की निबाहगार हूँ मैं ।5।

बेबस हूँ, कमजोर भी हूँ
पर खुद्दार हूँ मैं
हर एक एजाज की हकदार हूँ मैं ।6।

बँधी हूँ आजाद भी हूँ
सिमटी हूँ, पर दूर तक फैली हूँ मैं
चुप हूँ, जानती हूँ, बहुत समझदार हूँ मैं ।7।

शाम हूँ बहार हूँ
ठण्डी हवाओं का शीतल एहसास हूँ मैं,
फिर भी.....
खुद ही परदों में कैद इक किरदार हूँ मैं ।8।

समाज में, इक पूरा समाज हूँ,
बराबर की हकदार हूँ मैं
जो कभी सुनी नहीं गयी, वो आवाज हूँ मैं
कभी इक रिश्ता, कभी परिवार हूँ मैं,
कभी बनता-बनता विश्वास हूँ मैं ।9।

यूँ तो आदम की आदमी हूँ मैं
औरत के रूप में सादगी हूँ मैं ।।

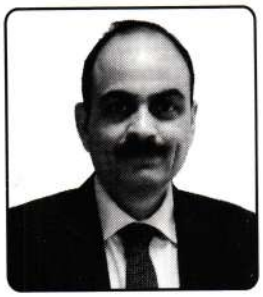

जितेन्द्र नाथ शर्मा
उप महालेखाकार (प्रशासन)

याद रखो

जब किसी एक व्यक्ति को क्रोध आ जाये तो दूसरे व्यक्ति को शान्त रहना चाहिये। तब तक शान्त रहें जब तक वो व्यक्ति खुद ठण्डा ना हो जाये, क्योंकि आग को कभी आग से बुझाया नहीं जा सकता। उसी प्रकार क्रोध को क्रोध से नहीं, शान्ति से, दुआओं से। घृणा की दवा तो केवल प्रेम है। जिस तरह निन्दा की दवा प्रशंसा है या मौन अथवा प्रतीक्षा है। ''करूणा-प्रेम-सत्य'' ये ऐसा अचूक रामबाण है कि जिसके आगे लोभ, मोह, मद, क्रोध, दुर्व्यवहार, ईर्ष्या सब शान्त हो जाते हैं।

हमें अपने माता-पिता से मिले इस जीवन को बसन्त बनाना चाहिये और इस छोटे से जीवन को हमें अपना समय प्रेम, सेवा, पूजा, समाज-सेवा, समर्पण, स्वाध्याय में व्यतीत करना चाहिये न कि कलह (विवाद, लड़ाई) में। ऐसी सोच रखने से मनुष्य का जीवन साकार हो जाता है और उसे अपने कर्मो के अनुसार फल प्राप्त होता है।

टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए।

मसौदे हिंदी में तैयार किजिए।

शब्दों के लिए अटकिए नहीं।

अशुद्धियों से घबराइए नहीं।

अभ्यास अविलंब आरम्भ कीजिए।

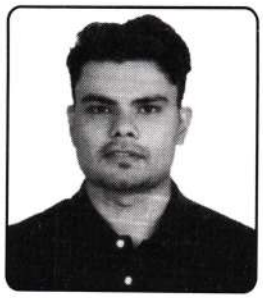

दिवाकर दहिया
डी.ई.ओ.

जीवन-सत्व

ये दिन भी तेरा है और ये शाम तेरी है,
रेहमत ऐ खुदा बेमिसाल तेरी है,
शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रूह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।

तुझे गुमराह करने की ये गलत हरकत मेरी है,
मेरे हर गुनाह को माफ करने की ऐ खुदा फितरत तेरी है,
कुदरत भी मजबूर है शायद मुझसे कोई गुनाह करवाने को,
ये कुदरत की किस्मत है, या ये किस्मत मेरी है?

शख्सियत मेरी बयाँ करें चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रूह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।

तुझसे सच छिपाने की हर कोशिश बेवजह मेरी है,
अंधेरों में तू रख मुझे, मेरे गुनाह की ये सजा मेरी है,
टुकड़ा हूँ मैं तेरे जिस्म का ऐ खुदा,
तेरी रजा में अब रजा मेरी है,

शख्सियत मेरी बयाँ करे चाहे कुछ भी,
लेकिन ये रूह मेरी मीरा है जो गुलाम तेरी है।
एक करम कर मुझ पर,
के दूर रख उस गुरूर को,
जो पूछे मुझसे,
कि ये दिन क्यों तेरा है?
ये शाम क्यों तेरी है ?

आखिर ये सारी दुनिया, गुलाम क्यों तेरी है?
शख्सियत मेरी बयाँ करे ये अब मुझसे
कि न रूह मेरी मीरा है,
ना गुलाम तेरी है।

सकारात्मक विचार

एम.आर. लक्ष्मी
वरिष्ठ लेखाकार

(सकारात्मक सोच से डिप्रेशन से बाहर आना)

वर्तमान भाग-दौड भरी जिंदगी में अपने कार्यालयीन एवं पारिवारिक समस्याओं से मनुष्य को चिंता एवं तनाव के रूप में नयी-नयी बीमारियाँ मिली है। चिंता एक ऐसा रोग हैं जो कभी भी खत्म नहीं होता अपितु वह हमें अन्दर से खोखला करता रहता हैं। मनुष्य स्वभाववश अनेक तरह की संभव व असंभव चिंता से ग्रस्त है जबकि नकारात्मक विचार हमें दुखी करता है जैसे किसी ने आपके कार्य में गलती निकाली और कहा आपको कुछ नहीं आता, आप किसी भी काम को ठीक से नहीं कर सकते। आप कार्यालय के किसी कार्य को ठीक से नहीं समझ पाते, आपका कार्य व्यर्थ है तो सकारात्मक विचार वाला व्यक्ति सोचेगा ठीक है मैं अपनी गलती किसी के द्वारा जान सका, मैं इसे ठीक से करने का प्रयत्न करुँगा। एकबार गलती होगी, दो बार, तीन बार, चौथी बार में मुझे आ जायेगा। मैं प्रयत्न करुँगा और वह प्रयत्न करता है। गलती हर मनुष्य से होती है। गलती द्वारा ही मनुष्य सीखता है अपितु नकारात्मक विचार होने पर हम सोचते हैं मेरी ही गलती क्यों निकाली जाती है, मुझे ही क्यो डाँटा जाता है, मेरा कार्य तो ठीक था लोग गलती जान बूझकर निकालते है, उन्हे कुछ नहीं आता। रात-दिन हम उस पर ही विचार करते हैं, हम ठीक से सो भी नहीं पाते, बस उन विचारों को हमेशा अपने दिमाग में कैद करते हैं। हमारा मन हमें बैचेन करता है या किसी ने आपके बारे में गलत बातें की तो भी आप सोचते है मेरे बारे में ही क्यों लोग बुरा कहते हैं। मै तो अच्छा हूँ, वह मेरे बारे में क्या जानते हैं। सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास कर लोग किसी को भी भला-बुरा कैसे कह सकते हैं। क्योंकि कुछ लोग अपने बारे में फैलाई गयी गलत अफवाहों का विरोध नहीं कर पाते हैं और वह डिप्रेशन का शिकार भी हो सकते हैं। यदि हम संकटों व परेशानियों के बारे में सोचेंगे तो विकास के मार्ग पर हमारा एक कदम भी आगे नही बढ़ेगा क्योंकि चिंता करने के कारण हम नकारात्मक विचार अपने अन्दर ला रहे हैं। इसलिए कहा जाता है जब मन में कोई बुरे विचार आ रहे हों तो मन को किसी कार्य मे लगा दें। ध्यान, योगा या अच्छी किताबें पढें या किसी पार्क में जाकर थोडी देर बैठें या अपनी कुछ अच्छी यादें जो हमारे मन को खुशी देती हों उसे याद करे । मन में बुरे विचार न आने दें।

नकारात्मक से सकारात्मक सोच तक पहुँचना व्यक्ति पर निर्भर करता है इसलिए अपनी सोच हमेशा सकारात्मक रखें। यह मन की पीड़ा को कम करता है। यदि मनुष्य चिंता छोडकर सकारात्मक चिंतन-मनन करे और मन को प्रसन्न रखते हुये अपने लक्ष्य की ओर बढ़े तो निस्संदेह उसका कार्य योजनानुसार होता चला जाता है, उसमें कोई बाधा नहीं आती। प्रसन्नचित रहने का उपाय अपने मानसिक आनंद को स्थिर रखना तथा अपने मन को किसी भी आने वाली दुर्भाग्य की आशंकाओ से ग्रस्त नहीं होने देना। सदैव मन में अच्छे विचारों को आने दें, सकारात्मक सोच व्यर्थ की चिताओं से मुक्ति दिलाती है तथा कोई अप्रिय प्रसंग एवं कष्ट आ जाने पर भी उनसे लड़ने की शक्ति प्रदान करती है। सकारात्मक सोच हमारे स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा है। सकारात्मक सोच से ही हमें सही दिशा मिलती है, इसलिए हमेशा अच्छा सोचें। किसी के मन को दुःख न पहुँचायें। सभी के लिए अच्छा सोचें, इससे मन प्रसन्न रहता है। सदैव सकारात्मक सोच से चिंताओं को पराजित करें, खुश रहें और सभी को खुश देखें। मन में बुरे विचारों को न आने दें। अच्छी सहेत के लिए सकारात्मक विचार से मन पर विजय प्राप्त करें।

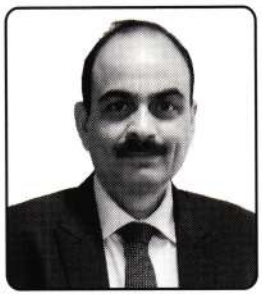

तेरी याद में

जितेन्द्र नाथ शर्मा
उपमहालेखाकार (प्रशासन)

आँखों से आँसू जब निकले,
गम हल्का सा हो जाता है।
कुछ पल मैं भी हँस लेता हुँ,
मन हल्का सा हो जाता है।
तेरी याद में, तेरी याद में....।।
वो प्यार तो एक कबूलनामा था,
जो हम आस लगाए बैठे थे।
क्यूँ दूरियाँ सी लग रही,
जो पास आकर बैठे थे।
कुछ रह गई कसक सी मन में,
जो भूल के सब हम बैठे थे।
तेरी याद में, तेरी याद में... ।।
सब बह गए प्यारे पलछिन,
वक्त की इस दरिया में।
उम्मीदों का सागर जाग उठा,
ढलती उम्र की इन झुर्रियों में।
ये सोच कर मन घबराता है,
कई बार इसे समझाता हूँ।
कुछ पल मैं भी हँस लेता हूँ,
मन हल्का सा हो जाता है।
तेरी याद में, तेरी याद में...।।

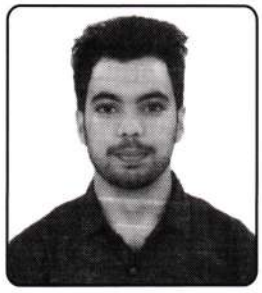

चंद्रपाल वर्मा
डी.ई.ओ

परिवर्तन की आस में दम तोडती अंतिम साँसें

दुष्कर्मियों का शिकार हुई एक नन्ही वक्ता अपनी माँ के गोद में लेटी, अंतिम शब्द कहती हुई।

माँ मैं एक पल और जीना चाहती
तू कहती थी मैं नन्ही परी हूँ आसमां तक जाउँगी
उज्जवल देश की प्रगति में मैं भी हाथ बटाउँगी।
तुने मुझे जो प्यार दिया, सपने मुझ में डाले जो
अंतिम साँसे मेरी बोलती पूरा उन्हे मैं करना चाहती।
माँ मै एक पल और.....

सोचा ना था कभी ये मैंने, मोड़ पर ऐसे ले आएगा
देश मेरा, वतन मेरा यही दुशमन बन जाएगा
मिली मुझे यह सजा बताओ क्या कसूर था मेरा
बंद पड़े हैं न्याय के दरवाजे तू उनसे क्यूँ गुहार माँगती
माँ मैं एक पल और .....
कानून में बैठे हैं जो अगर ना दें वो तेरा साथ
आयी विपत्ति जिन पर यह या जो जाने तेरा ये हाल
उठाकर सिर तू देख सदा यह होंगे तेरे साथ
एक संगठन इन अत्याचारियों के विरुद्ध मैं देशवासियों से मांगती
माँ मै एक पल और.....

करुणा भरे नैनों में थी उसको यह आस
व्यर्थ नहीं जाएगा मेरा जीवन कुछ तो होगा अहसास
देखते ही देखते उसने मौत को गले लगा लिया
कुछ दरिंदों के कारण उसने अपना जीवन व्यर्थ गंवा दिया
तभी थम सी गई सभी की साँसें, लगा रुक सा गया हो आसमान
ना ही चल पाया समय और न ही हुआ उसका आगाज
फिर विलाप से भरी गूँज उठी एक आवाज।
हाय राम.... हाय राम.... हाय राम....

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।
जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

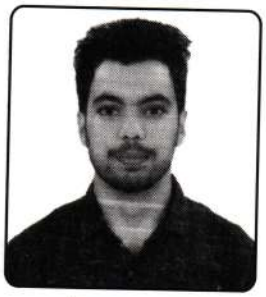

चंद्रपाल वर्मा
डी.ई.ओ

शहीद हुए सैनिक की डायरी के अंतिम पन्ने पर लिखे खत को पढ़ती उसकी माँ

मेरे बहते हुए रक्त के अंतिम कतरे भी,
जय हिंद को गुनगुनाएंगे।
उद्घोषणा दुशमनों को मेरे जीते जी तो
सरहद पर वह पाँव न रख पाएंगे।
गर तिरंगे में लिपटा हुआ मेरा जिस्म,
किसी रोज घर की चौखट पे आये
तो पूछना तिरंगे के अशोक चक्र से,
वह तुझे एक योद्धा की माँ बतलाएंगे।
मेरे बहते हुए रक्त के अंतिम कतरे भी,
जय हिंद ही गुगुनाएंगे।

मेरी देह को जलती लपटों में,

वीरता के गीत आसमान तक गुनगुनएंगे

आँखों से गर तेरे आँसू झलके तो रोक लेना,

सरहद पर खड़े सैनिक यह सह न पाएंगे।

मैं मर कर भी इस कदर अमर हो जाउँगा,

फिर गर्व से तुझे सैनिक की माँ बुलाएंगे।

मेरे रक्त के अंतिम कतरे भी

जय हिंद ही गुनगुनाएंगे।

वही भाषा जीवित रह सकती है जो जनता का ठीक-ठीक प्रतिनिधित्व कर सके और हिंदी इसमें समर्थ है।

पीर मुहम्मद मूनिस

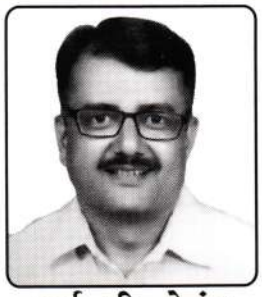

वाई. डी. तेलंग
वरि. लेखाकार

प्रदूषण एक समस्या

धरती माँ। जिसे माँ कहा, जिसने हमें पाला, पोसा, बड़ा किया उसे आज हम क्या दे रहे है? कुछ नहीं बस कुछ भी नहीं!!

धरती के बिना इन्सान के या कहो संपूर्ण जीव-सृष्टि के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जिस के साथ अपना पूर्ण रूप से संबंध जुडा हुआ है उसे हम कितने हल्के में ले रहे हैं।

इस आशय पर, मुद्दे पर न जाने, कितने व्याख्यान, चर्चासत्र आयोजित किए गए, लेकिन परिणाम जितना होना था वो तो दूर की कौड़ी वनकर रह गया।

मानव जाति की लालसा यूँ कहो निरंतर पाते रहने की इच्छा धरा को एक तरफ से नोच रही है तो दूसरी ओर भौतिकवाद एवम विलासिता अवनि को क्षति पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही है।

प्रगति, विकास ये दोनों अवश्य होने चाहिए। आदिमानव और आधुनिक मानव में अंतर स्पष्ट रूप से नजर आए, पर इस के लिए वसुंधरा के साथ बर्बरता दिखाओगे तो फिर अपना विनाश पक्का समझो।

पर्यावरण को आये दिन छेड़ा जा रहा है। दूषित हवा, जल, फल, सब्जियाँ और ना जाने क्या-क्या उत्पादन को बढाने के लिए खाद और दवाईयों की भरमार की जाती है। पर्यावरण को शुद्ध रखेंगे तभी पृथ्वी पर संन्तुलन बना रहेगा।

वृक्ष जो पर्यावरण का अटूट हिस्सा है उनको भी निर्दयता से काटा जा रहा है। अरे मानव तू कैसा प्राणी है जो अपना नुकासन खुद कर रहा है?

आजकल वर्षा भी सामान्य से असामान्य होती जा रही है। (तापमान बढता जा रहा है और हिमनग पिघलने लगे तापमान बढाता जा रहा है) कुदरत ने जो संसाधन जैसे तेल, गैस, कोयला आदि दिए हैं, उनका अमर्याद दोहन उपभोक्ताओं द्वारा किया जा रहा है, परिणामत, ओजोन की परत में छेद पाए जा रहे हैं। तापमान बढने के कारण हिमनग पिघलकर जलस्तर में वृद्धि हो रही है।

अभी भी समय है सुधर जाओ। इस प्रकृति को, अचला को बचाना हमारा परम कर्तव्य है। प्लास्टिक, कार्बनवायु आदि घातक चीजों को टालने में ही समझदारी है। पेड लगाएं, इस धरती को हरा-भरा रहने दीजिए। शुद्ध प्राणवायु बढेगा तो हमारी वसुंधरा भी खुली हवा में साँस लेगी।

Appropriate action may be taken	उपयुक्त कार्रवाई की जाए
Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त कर लिया जाए
Action may be taken as proposed	प्रस्ताव के अनुसार कार्रवाई की जाए
All concerned need to note	सभी संबंधित व्यक्ति नोट करें
As early as possible	जितनी जल्दी हो सके
As per details below	नीचे दिए ब्यौरे के अनुसार
Attention is invited to	....की ओर ध्यान दिलाया जाता है
By authority of	के प्राधिकार से
Comply with	अनुपालन करना
Comments may be called for	....से विचार आमंत्रित किए जाएं
Delay can not be warned	विलंब को माफ नहीं किया जा सकता
Delay may be explained	विलंब का कारण बताया जाए
Expedite Action	शीघ्र कार्रवाई करें
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण माँगा जाए
Facts of the case may be put up	मामले के तथ्य प्रस्तुत किए जाएं
For favourable action	अनुकूल कार्रवाई के लिए
For perusal and orders please	कृप्या देखें और आदेश दें
For sanction/approval please	मंजूरी/अनुमोदन के लिए
Issue reminder immediately	अनुस्मारक तत्काल भेजें
I am directed to say	मुझे यह कहने का निदेश हुआ है
In connection with	के संबंध मे
In the prescribed manner	निर्धारित ढंग से
It has been decided	यह निर्णय लिया गया है
Needs no comment	टिप्पणी की आवश्यकता नहीं
Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें
Paper under consideration	विचाराधीन कागजात
Placed at the disposal of	को सौंपा गया
Quote reference	संदर्भ बताएं
Self explanatory	स्वतः स्पष्ट
Subject to approval of	....द्वारा अनुमोदित होने पर
Subject to confirmation	पुष्टि होने पर
Till further orders	अगले आदेश होने तक
To the point	विषयानुकूल, सुसंगत, प्रासंगिक
Without assigning any reason	कोई कारण बताए बिना

संयुक्त हिंदी पखवाड़ा-2020 मे आयोजित पोस्टर प्रतियोगिता मे श्री श्रीनिवास आचारी, डी.ई.ओ. द्वारा प्रदर्शित पोस्टर जिसे द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ ।

प्रकाशम बैरेज, विजयवाड़ा

उच्च न्यायालय, अमरावती